6

प्रारंभिक विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का उद्यमशीलता के प्रति दृष्टिकोण

मनीष कुमार गौतम*

प्रारंभिक शिक्षा, विद्यार्थियों को सिखाने एवं आदतों के निर्माण के लिए सबसे उपयुक्त समयावधि होती है। उद्यमिता शिक्षा क्षेत्र से जुड़े विद्वानों ने भी प्रारंभिक शिक्षा को उद्यमिता कौशल एवं उद्यमिता आदतों के निर्माण की आधारशिला माना है। विगत कुछ वर्षों से उद्यमशील समाज के निर्माण को योजनाकारों ने विशेष महत्व दिया है। इस दिशा में उद्यमिता शिक्षा को भारतीय विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। प्रस्तुत शोध में केंद्रीय विद्यालयों में शिक्षारत कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों का एवं उनके शिक्षकों की उद्यमशीलता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। विद्यार्थियों का एवं उनके शिक्षकों की उद्यमशीलता के प्रमुख व्यक्तिगत गुणों, उद्यमशील व्यवहार, उद्यमिता क्षमता एवं उद्यमिता कौशल के बारे में दृष्टिकोण का विश्लेषण इस पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

विद्यार्थियों का बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास, प्रारंभिक शिक्षा के वर्षों में ही तेज़ी से होता है। प्रारंभिक शिक्षा के विद्यार्थियों में वस्तुओं एवं घटनाओं के बीच संबंधों को समझने तथा परखने की क्षमता तीव्र होती है, जिसके फलस्वरूप वे किसी भी समस्या के समाधान में अपनी चिंतन प्रक्रिया को तार्किक एवं क्रमबद्ध बनाने में सक्षम हो पाते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थी पाठ्यक्रम से संबंधी कौशल तथा पाठ्येतर कौशल दोनों को ही सीखकर अपने उज्ज्वल भविष्य की नींव डालता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों में उपलब्धि प्रेरक का विकास भी होता है, बर्क (2005)। विगफील्ड, बंस और इक्कलस (2006) ने अपने-अपने शोध अध्ययनों से इस बात की पुष्टि की है कि प्रारंभिक शिक्षा की अवधि काल में विद्यार्थियों में सृजनात्मक अंत:शक्तियों का विकास तेज़ी से होता है। ऐशक्राफ़्ट और रैडवेन्सक (2010) ने इस अवस्था को विभिन्न कौशल और क्षमताओं के विकास की सबसे उपयुक्त अवस्था माना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को संरचनात्मक एवं बहुबुद्धि-आधारित बनाया गया है। डेमिरल (2005) के अनुसार संरचनात्मक आयाम में अधिगमकर्ता शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रभावी भूमिका अदा करता है। विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध आदि अनेक कौशल के विकास को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या

**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विद्यापीठ, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, एस एच-7, गया, पंचानपुर रोड, 824236 (बिहार)

की रूपरेखा 2005 में पाठ्यसहगामी क्रियाओं या पाठ्यक्रम के अनिवार्य कड़ी के रूप में अनेक विषयों या क्रियाकलापों, जैसे— जीवन कौशल, कार्य एवं शिक्षा, संगीत एवं कला के द्वारा शिक्षा, सामाजिक उत्पादक कार्य आदि को सम्मिलित किया गया है जो अंततोगत्वा उद्यमिता कौशलों के विकास में सहायक होते हैं।

भावी पीढ़ी को उद्यमिता कौशल में दक्ष करने हेतु विद्यालयी शिक्षा विशेषकर प्रारंभिक शिक्षा को तार्किक, सृजनात्मक एवं स्वायत्त बनाने की आवश्यकता है (यूरोपियन कमीशन, 2008)। उद्यमिता शिक्षा को विषय विशेष के रूप में प्रारंभिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थान देने की अपेक्षा इसे अत:विषयक उपागम में अपनाना ज़्यादा सुगम एवं सार्थक है (यूरोपियन कमीशन, 2011)। यूरोपियन कमीशन (2011) ने उद्यमिता क्षमताओं के परीक्षण एवं संवर्द्धन हेतु प्रारंभिक शिक्षा को सबसे उपयुक्त अवधि माना है। भारत में रोज़गारपरक शिक्षा के अभाव ने अनेक सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। बेरोज़गारी, शिक्षा उपयुक्त रोज़गार न मिलना आदि एक समस्या के रूप में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चुनौतीयाँ बन गयी हैं (झा, 2019)। यह आवश्यक है कि भारतीय युवा रोज़गार देने वाला बने न कि रोज़गार लेने वाला। यह संस्थागत बदलाव शिक्षा के आयाम में बदलाव की ओर ध्यान आकर्षित करता है। उद्यमिता कौशल में निपुण युवा देश के आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान हेतु कटिबद्ध होगा। भारत को एक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था बनाने हेतु यह आवश्यक है कि विद्यालयी शिक्षा विशेषकर प्रारंभिक शिक्षा से जुड़ा हर भागीदार उद्यमिता शिक्षा एवं उद्यमिता से जुड़े हर संदर्भ के प्रति जागरूक रहे एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखे (राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, 2008)। शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षा योजनाकारों का उद्यमिता के प्रति दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण कारक है जो इसके संभावित उद्देश्यों की प्राप्ति में सबसे बड़े सहायक एवं बाधक हैं (यूरोपियन कमीशन, 2008)। सभी पक्षकारों का सकारात्मक दृष्टिकोण उद्यमी समाज के निर्माण के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। इस महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए ये शोध पत्र प्रारंभिक शिक्षा में उद्यमिता के महत्व को रेखांकित करता है, जिससे प्रभावी उद्यमशील शैक्षिक परिवेश का निर्माण किया जा सके। अत: यह आवश्यक है कि उद्यमिता के संदर्भ में एक व्यापक समझ बने।

उद्यमिता एवं उद्यमिता शिक्षा

सामान्यत: उद्यमिता को नए व्यापार या उद्योगों के निर्माण एवं संचालन के पर्यायवाची के रूप में देखा जाता है। उद्यमिता, व्यापार या उद्योग के स्वामित्व से बढ़कर है। विभिन्न विद्वानों ने उद्यमी एवं उद्यमिता को अलग-अलग संदर्भों में परिभाषित किया है। हेरटे और स्टीवर्ट (2012) ने उद्यमी को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया है जो नवाचार के साथ नए उद्योगों की स्थापना करे तथा उद्यमिता शिक्षा को उद्यमिता कौशल के विकास में सहायक हो। जॉन और इंग्लिश (2004) ने उद्यमिता शिक्षा को व्यापार कौशल एवं नए उद्योगों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न करने के आयाम के रूप में परिभाषित किया है। गौतम और सिंह (2015) ने उद्यमिता शिक्षा को उद्यमिता संबंधी कौशल, अभिवृत्ति एवं क्षमताओं के शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया माना और उद्यमी को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जो सृजनात्मक हो, नवाचारी हो,

जोखिम उठाने में सक्षम हो तथा अपने इन कौशल का उपयोग कर अपने विचारों को मूर्त रूप देने में प्रवीण हो। गिब्ब (2011), जॉन्स और इरेडाले (2010) एवं नैक और ग्रीन (2011) ने उद्यमी को जोखिम लेकर अवसरों को सफलता में बदलने वाले व्यक्ति के रूप में देखा।

उद्यमिता कौशल एवं क्षमता का प्रोत्साहन एवं निर्माण अनुभवजन्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है (मवासलविबा, 2010)। परंपरागत शिक्षण अधिगम पद्धति द्वारा उद्यमिता कौशल का निर्माण और प्रशिक्षण संभव नहीं है (गर्नेत्त, 2012)। गौतम (2019) ने अपने शोध अध्ययन में विभिन्न उद्यमिता कौशल एवं उद्यमिता व्यवहार हेतु 18 शिक्षण अधिगम शिक्षणशास्त्रों का चयन किया है जिन्हें विषयेत्तर शिक्षण उपागम द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में लाया जा सकता है। उद्यमिता एवं उद्यमिता कौशल से युक्त विद्यार्थी भारत की सामाजिक-आर्थिक उन्नति में सार्थक योगदान दे सकेंगे।

भारत में उद्यमितापूर्ण वातावरण के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि देश की युवा पीढ़ी उद्यमिता क्षमताओं में निपुण हो, जिसके लिए यह आवश्यक है कि भारत की युवा पीढ़ी उद्यमिता के विषय में जानकारी एवं सकारात्मक दृष्टिकोण रखे। प्रस्तुत शोधपत्र केंद्रीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की उद्यमिता के बारे में उनके दृष्टिकोण का अध्ययन है।

शोध प्रक्रिया

अकादमिक वर्ष 2018–19 में वाराणसी ज़िले के विभिन्न केंद्रीय विद्यालयों में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे कक्षा छठी, सातवीं एवं आठवीं के 324 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग करके किया गया। इन्हें पढ़ा रहे 51 शिक्षकों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श प्राविधि से किया गया। उद्यमशीलता के स्तर को मापने हेतु शोधकर्ता द्वारा गौतम और सिंह द्वारा निर्मित इंटरप्रेन्योरशिप माइंडसेट स्केल का उपयोग किया गया। उद्यमशीलता पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण जानने हेतु विद्यार्थी के उद्यमशीलता दृष्टिकोण प्रारूप तथा शिक्षकों के दृष्टिकोण को जानने हेतु शिक्षकों के उद्यमशीलता दृष्टिकोण प्रारूप का निर्माण शोधार्थी ने स्वयं किया है। उपरोक्त दोनों प्रारूप और चार खुली प्रश्नावली, जो उद्यमिता के प्रमुख गुणों को, उसके व्यवहार, उसके कौशल एवं क्षमताओं से संबंधित हैं। प्रारूप की वैधता को विद्यालयी शिक्षा, शिक्षक शिक्षा एवं उद्यमिता शिक्षा के विषय विशेषज्ञों से सुनिश्चित कराया गया है।

अध्ययन के प्रथम चरण में इंटरप्रेन्योरशिप माइंडसेट स्केल मापनी द्वारा विद्यार्थियों के उद्यमशीलता के स्तर का पता लगाया गया। मापनी में सर्वाधिक मान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को चुना गया तथा अन्य विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों द्वारा उनमें अवेक्षित उनके प्रमुख गुणों को, उनके व्यवहार, उनके कौशल एवं क्षमताओं के संदर्भ में दी गई राय को प्रारूप द्वारा संग्रहित किया गया। प्रारूप से प्राप्त गुणात्मक प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरांत उन्हें आवृत्ति एवं प्रतिशत के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

शोध परिणाम

कक्षा छः से आठ तक के केंद्रीय विद्यालयों में अध्ययन कर रहे 324 विद्यार्थियों एवं उनके 51 शिक्षकों की उद्यमशीलता के प्रति दृष्टिकोण को निम्नलिखित सारणियों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

उद्देश्य 1— प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों की उद्यमशील के व्यक्तिगत गुणों के प्रति दृष्टिकोण।

परिणाम— सारणी 1 से स्पष्ट है कि 25.61 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'आत्मविश्वास' को उद्यमशीलता का सबसे प्रमुख गुण माना है। 15.43 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'नेतृत्व गुण', 10.82 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'सृजनात्मकता',10.49 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'दृढ़निश्चय शक्ति' को उद्यमशीलता के प्रमुख व्यक्तिगत गुण के रूप में उल्लेखित किया है। मात्र 07.09 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'व्यावहारिक निपुणता', तथा 06.17 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'दूरदर्शिता' को प्रमुख गुण के रूप में उल्लेखित किया है।

परिणाम—शिक्षकों ने 'उत्तरदायित्व निर्वहन' को 23.53 प्रतिशत, 21.56 प्रतिशत शिक्षकों ने 'आशावादी गुण', 15.69 प्रतिशत शिक्षकों ने नवाचार हेतु प्रेरित होने के गुण को, 09.80 प्रतिशत शिक्षकों ने दृढ़ इच्छा शक्ति को, सृजनात्मकता एवं नेतृत्व क्षमता को 13.73 प्रतिशत शिक्षकों ने प्रमुख उद्यमिता गुण के रूप में उल्लेखित किया है।

सारणी 1— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित प्रमुख व्यक्तिगत गुणों के बारे में विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	प्रमुख व्यक्तिगत गुणों के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	आत्मविश्वास होना	83	25.61%
2.	नेतृत्व क्षमता का गुण होना	50	15.43%
3.	सृजनात्मक होना	35	10.82%
4.	दृढ़ निश्चयी होना	34	10.49%
5.	जोखिम लेने की प्रवृत्ति	28	08.64%
6.	दृढ़ इच्छाशक्ति का होना	26	08.04%
7.	आशावादी होना	25	07.72%
8.	व्यावहारिक एवं दूसरों से अच्छे सबंध बनाने में निपुण होना	23	07.09%
9.	दूरदर्शी होना	20	06.17%

सारणी 2— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित प्रमुख व्यक्तिगत गुणों के बारे में शिक्षकों के दृष्टिकोण की आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	प्रमुख व्यक्तिगत गुणों के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	दी गई ज़िम्मेदारी को पूर्ण लगन से करना	12	23.53%
2.	आशावादी होना	11	21.56%
3.	कुछ नया करने की प्रवृत्ति	08	15.69%
4.	सृजनात्मक होना	07	13.73%
5.	नेतृत्व क्षमता का गुण होना	07	13.73%
6.	दृढ़ इच्छाशक्ति का होना	05	09.80%

विवेचना— उपरोक्त सारणी 1 एवं 2 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने सृजनात्मकता, नेतृत्व, दृढ़ इच्छाशक्ति एवं आशावादिता के गुणों को एक उद्यमी के प्रमुख गुण के रूप में उल्लेखित किया है। जोखिम लेने की प्रवृत्ति, आत्मविश्वास, व्यवहारकुशलता आदि को विद्यार्थियों ने प्रमुख गुण माना जिसे कुराटका और हर्न्सब्य (1996) ने भी उद्यमी गुण माना। साथ ही कुराटका और हर्न्सब्य (1996) ने नेतृत्व गुण, सृजनात्मकता और दूरदर्शिता को उद्यमी का प्रमुख व्यक्तिगत गुण माना जिसकी पुष्टि वेस्पर और विलियम (1997); गुन्दरी एवं किच्कल (1998) ने भी अपने-अपने शोध अध्ययनों में की है। आत्मविश्वास, जोखिम लेने की प्रवृत्ति, व्यावहारिक निपुणता एवं साहसी होने जैसे गुण एक उद्यमी से होने चाहिए। क्रो और मिचेल (2006) ने अपने अध्ययन में उद्यमी के दूरदर्शी होने के साथ आशावादी होने के गुण को उद्यमी का प्रमुख गुण माना। किर्बी (2004) ने हमेशा दूसरों से अच्छे संबंध बनाने को एक सफल उद्यमी का गुण नहीं माना बल्कि यह उल्लेखित किया कि उद्यमी अपने कार्यक्षेत्र में व्यावसायिक संबंधों का निर्माण करते हैं और वे व्यक्तिगत सबंध बनाने से बचते हैं।

उद्देश्य 2— प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों का उद्यमशील व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण।

परिणाम—'उत्तरदायित्व लेना' को 45.99 प्रतिशत, 'समूह को प्रेरित करना' को 21.91 प्रतिशत, 'निर्भीक व्यवहार' को 17.35 प्रतिशत तथा 'निर्णय लेने में तत्परता' के गुण को 14.75 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रमुख उद्यमशील व्यावहारिक गुण के रूप में उल्लेखित किया है।

सारणी 3— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित उद्यमशील व्यवहार के बारे में विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	कक्षा की गतिविधियों में उत्तरदायित्व लेना	149	45.99%
2.	पाठ्येतर क्रियाओं में सहभाग करना एवं अन्य विद्यार्थियों को भी अभिप्रेरित करना	71	21.91%
3.	किसी भी विषय पर बेबाकी से अपनी बात को रखना	56	17.35%
4.	तुरंत निर्णय लेना	48	14.75%

परिणाम— शिक्षकों ने 'पहल करने, को 41.17 प्रतिशत, 29.41 प्रतिशत शिक्षकों ने 'व्यवस्थित कार्य करने की आदत' को, 15.69 प्रतिशत शिक्षकों ने 'जिज्ञासु प्रवृत्ति' को तथा 'अन्वेषण की प्रवृत्ति' को 13.73 प्रतिशत शिक्षकों ने प्रमुख उद्यमिता व्यवहार के रूप में उल्लेखित किया है।

सारणी 4— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित उद्यमशील व्यवहार के बारे में शिक्षकों के दृष्टिकोण की आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	उद्यमशील व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों में अपने आप को प्रस्तुत करना	21	41.17%
2.	व्यवस्थित कार्य करने की प्रवृत्ति	15	29.41%
3.	कक्षागत एवं कक्षा के अतिरिक्त विभिन्न मुद्दों की जानकारी प्राप्त करने की प्रवृत्ति	08	15.69%
4.	कुछ न कुछ नया चुनौतीपूर्ण खोजने की प्रवृत्ति रखना	07	13.73%

विवेचना— सारणी 3 एवं 4 यह प्रदर्शित करती है कि विद्यार्थी एवं शिक्षकों के उद्यमशील व्यवहार के संदर्भ में अलग-अलग दृष्टिकोण रखते हैं। एक ओर विद्यार्थियों ने जहाँ 'उत्तरदायित्व लेना' एवं 'समूह को प्रेरित करने' को, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों ने 'पहल करने' एवं 'सुव्यवस्थित कार्य करने' को प्रमुख उद्यमशील व्यवहार माना है। गुन्दरी और किच्कल (1998) ने 'निर्भीक व्यवहार', 'लचीलापन' तथा जॉन एवं इंग्लिश (2004) ने आगे बढ़कर 'उतरदायित्व लेना' के साथ ही तुरंत निर्णय लेने की प्रवृत्ति को एक उद्यमशील व्यक्ति का प्रमुख व्यावहारिक गुण माना। यूरोपीय यूनियन (2008) ने 'अन्वेषण एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति' को एक प्रमुख उद्यमशील व्यवहार माना है।

उद्देश्य 3—प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों का उद्यमिता कौशल के प्रति दृष्टिकोण।

सारणी 5— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित उद्यमिता कौशलों के बारे में विद्यार्थियों के दृष्टिकोण की आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	उद्यमिता कौशलों के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	जिज्ञासु प्रवृत्ति	148	45.57%
2.	पहल करना	68	20.99%
3.	निरंतर प्रयत्नशील रहना	52	16.05%
4.	समस्या का हल निकालना	37	11.42%
5.	वाकपटुता	19	05.07%

परिणाम— विद्यार्थियों ने 'जिज्ञासु' प्रवृत्ति (45.57 प्रतिशत) को सबसे प्रमुख उद्यमिता कौशल के रूप में उल्लेखित किया। 20.99 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'पहल करने के कौशल' को प्रमुख कौशल माना। मात्र 05.07 प्रतिशत विद्यार्थियों ने 'वाकपटुता' को प्रमुख गुण माना।

सारणी 6— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित उद्यमिता कौशल के बारे में शिक्षकों के दृष्टिकोण की आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	उद्यमिता कौशल के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	संचार कौशल में कुशल	15	29.41%
2.	अवसर को मौके में बदलने का कौशल	13	25.48%

3.	शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका का निर्वाहन करना	08	15.69%
4.	कम समय में सटीक निर्णय लेना	08	15.69%
5.	आत्मनिरीक्षण का कौशल	07	13.73%

परिणाम— शिक्षकों ने 'प्रभावकारी संचार कौशल' को 29.41 प्रतिशत, 25.48 प्रतिशत शिक्षकों ने 'अवसर को मौके में बदलने' को, 'कम समय में सटीक निर्णय लेने' को 15.69 प्रतिशत शिक्षकों ने, तथा 'आत्म निरीक्षण के कौशल' को मात्र 13.73 प्रतिशत शिक्षकों ने प्रमुख उद्यमिता कौशल के रूप में उल्लेखित किया है।

विवेचना— सारणी 5 एवं 6 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों ने जहाँ 'जिज्ञासु प्रवृत्ति' को एवं 'पहल करने' को प्रमुख कौशल माना, वहीं 'प्रभावकारी संचार कौशल' एवं 'अवसर को मौके में बदलने' के कौशल को शिक्षकों ने प्रमुख उद्यमिता कौशल माना। गुन्दरी और किच्कल (1998) ने 'प्रभावकारी संचार कौशल', 'समस्या समाधान का कौशल', 'लोगों के जल्दी राजी करने का कौशल', कुराटका और हर्न्सब्य (1996) ने 'कुछ नया सीखने का प्रयास करना', ह्यत्ती और ओ' गोर्मन (2004) ने 'प्रयत्नशीलता एवं आत्मनिरीक्षण' के कौशल को' तथा किर्बी (2004) ने 'जिज्ञासु प्रवृत्ति' को प्रमुख उद्यमिता कौशल माना है। गौतम और सिंह (2015) ने 'अवसर को मौके में बदलने' के कौशल को महत्वपूर्ण कौशल माना है।

उद्देश्य 4— प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों एवं उनके शिक्षकों का उद्यमिता क्षमता के प्रति दृष्टिकोण।

सारणी 7— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित उद्यमिता क्षमता के बारे में विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का बारंबारता एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	उद्यमिता क्षमता के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	सहपाठियों की विषयगत एवं विषयेतर समस्याओं का नया व अप्रचलित हल निकालना	87	26.85%
2.	संसाधनों को जुटाने की क्षमता	72	22.22%
3.	अनिश्चितता से सामना करने की क्षमता	69	21.90%
4.	कार्य को सुनियोजित एवं समयबद्ध तरीके से निपटाना	53	16.36%
5.	समस्या को तुरंत समझना तथा हल निकालने के लिए तत्पर होना	43	13.27%

परिणाम—'समस्याओं को अवसर में देखना तथा असामान्य हल निकलने की क्षमता' को 26.85 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्रमुख उद्यमशील क्षमता के रूप में उल्लेखित किया। 'संसाधनों को जुटाने की क्षमता' को 22.22 प्रतिशत, 'अनिश्चितता से सामना करने की क्षमता' को 21.90 प्रतिशत , 'सुनियोजित एवं समयबद्ध कार्य करने की क्षमता' को 16.36 प्रतिशत, 'समस्या को तुरंत समझना तथा हल निकलने की

सारणी 8— उद्यमशील विद्यार्थी के अपेक्षित उद्यमिता क्षमता के बारे में शिक्षकों के दृष्टिकोण का आवृत्ति एवं प्रतिशत वितरण

क्रम संख्या	उद्यमिता क्षमता के प्रति दृष्टिकोण	बारंबारता	प्रतिशत (%)
1.	वाकपटुता	13	25.48%
2.	नेतृत्व क्षमता	11	21.57%
3.	कार्यों को सुनियोजित एवं समयबद्ध तरीके से निपटाना	09	17.65%
4.	अनिश्चितता से सामना करने की क्षमता	09	17.65%
5.	निर्देशित एवं प्रेरित करने की क्षमता	09	17.65%

क्षमता' को 13.27 प्रतिशत विद्यार्थियों ने उद्यमिता क्षमता के रूप में उल्लेखित किया।

परिणाम— 'वाकपटुता' को 25.48 प्रतिशत शिक्षकों ने, 21.57 प्रतिशत शिक्षकों ने 'नेतृत्व क्षमता', 'सुनियोजित एवं समयबद्ध कार्य करने की क्षमता', 'सकारात्मक दृष्टिकोण' तथा 'निर्देशित एवं प्रेरित करने की क्षमता' को 17.65 प्रतिशत शिक्षकों ने मुख्य उद्यमिता क्षमता के रूप में उल्लेखित किया है।

विवेचना— सारणी 7 एवं 8 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के उद्यमिता क्षमता के संदर्भ दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। सारणी से स्पष्ट है कि शिक्षक जहाँ तोल-मोल एवं नेतृत्वक्षमता को प्रमुख उद्यमिता क्षमता मानते हैं, वहीं विद्यार्थियों ने समस्याओं को अवसर में बदलने के साथ उसके अप्रचलित हल निकालने की क्षमता तथा संसाधनों को जुटाने की क्षमता को प्रमुख उद्यमिता क्षमता माना है। इन क्षमताओं को बहुत से विद्वानों ने भी प्रमुख क्षमता माना है, कुराटका और हर्न्सब्य (1996) ने तोल-मोल, समस्या समाधान, अवसर को सफलता में बदलने के कौशल को एक कुशल उद्यमी का कौशल माना हैं। ह्यत्ती और ओ'गोर्मन (2004) तथा किर्बी (2004) ने इसके साथ 'सीमाओं से परे सोचने का कौशल', 'अव्यावहारिक परिस्थितियों में सामंजस्य बनाने के कौशल' को प्रमुख कौशल माना।

निष्कर्ष

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के उद्यमशीलता को जोखिम लेने की प्रवृत्ति, नेतृत्व गुण, सृजनात्मकता, निर्देशित एवं प्रेरित करने की क्षमता, निर्भीक व्यवहार, समस्या समाधान की क्षमता, नवाचार की प्रवृत्ति आदि गुणों के रूप में उल्लेखित किया है। उपरोक्त परिणाम शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की उद्यमशीलता के प्रति उनके विचार को दिखलाता है। उपरोक्त परिणाम ये दर्शाते हैं कि विद्यार्थी एवं शिक्षकों उद्यमिता में उद्यमिता कौशल, क्षमताओं एवं गुणों के विषय में सामान्य समझ रखते हैं, जो उनके उद्यमशीलता के संदर्भ में उनकी जागरूकता को दर्शाता है। भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने उद्यमिता के प्रति सकारात्मक परिवेश बनाने के लिए अनेक कदम उठाए हैं जिससे जनमानस में एक समझ विकसित हुई है। केंद्रीय विद्यालयों में शिक्षण-अधिगम में विद्यार्थियों को दी जाने वाली स्वायत्तता एवं स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में उद्यमिता कौशल को देखा जा सकता

है। विद्यालयों की शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक क्रियाविधि विद्यार्थियों में उद्यमिता कौशल के संवर्धन एवं प्रसंस्करण में महती भूमिका अदा करती है। अत: भारत में उद्यमिता संस्कृति को बढ़ावा देना है तो यह आवश्यक है कि शिक्षा से जुड़ा हर हिस्सेदार इन उद्यमिता कौशल, व्यवहारों, क्षमताओं तथा गुणों को अपनी दिनचर्या का आवश्यक अंग बना ले। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि उद्यमिता को विद्यालयी शिक्षा में अंत:विषयक आयाम एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से लाया जाए। शिक्षकों को उद्यमिता के संदर्भ में जागरूक एवं उन्हें एक उद्यमशील शिक्षकों के रूप में प्रशिक्षित करने हेतु शिक्षक शिक्षा को अधिक उपादेय बनाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

ऐशक्राफ़्ट, एम. एच. और जी. ए. रदवांस्का रैडवेन्स,. 2010 . *कॉग्निशन*. पाँचवाँ संस्करण. प्रेन्टिस हॉल, मैसाचुसेट्स, बोस्टन.

गार्नेत्त, जे. 2012. एंटरप्राइज़ पेडागोज़ी इन म्यूज़िक एंड एक्सप्लोरेशन ऑफ़ मल्टीपल पेडागोज़ी. *म्यूज़िक एजुकेशन रिसर्च*, 15(1), 1–18. https://www.tandfonline.com /doi/abs/10.1080/14613808.2012.703175 6 फरवरी, 2015 को देखा गया।

गुनै,एस. 2004 . *इंटरप्रेन्योरशिप बेसिस कांसेप्ट एंड सम इश्यूज़*. पोलिटिकल पब्लिशिंग हाउस, अंकारा, टर्की.

गौतम, एम. के. और एस. के. सिंह. 2015. इंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन: कांसेप्ट , कारेक्टेरिस्टक एंड इम्प्लिकेसन फ़ॉर टीचर एजुकेशन. *शैक्षिक परिसंवाद*.5 (1), 21– 35. http://www.spijebhu.in/SPIJ-Jan15%2021–35.pdf 18 मार्च, 2020 को देखा गया।

गौतम, एम.के. 2019. *डेवलपमेंट ऑफ़ इंटरप्रेन्येरियल मांइडसेट मॉडल फ़ॉर अवर्नेस ऑफ़ पर्सपेक्टिव टीचर्स*. अप्रकाशित शोध. शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

गिब, ए. 2011. कांसेप्ट इंटू प्रेक्टिस: मीटिंग द चैलेंजेज ऑफ़ डेवलपमेंट ऑफ़ इंटरप्रेन्योरशिप एडुकेटर्स अराउंड एन इनोवेटिव पैराडिम. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंटरप्रेन्योरशिप बिहेवियर एंड रिसर्च*, 17, 146-165. https://www.researchgate.net/publication /239781464_Concepts_into_practice_Meeting_the_challenge_ of_development_of_entrepreneurship_educators_around_an_innovative_paradigm_The_case_of_the_International_Entrepreneurship_Educators'_Programme_IEEP 20 फरवरी, 2015 को देखा गया।

जोन्स, बी. और एन. आयरडेल. 2010. एंटरप्राइज़ एजुकेशन ऐज़ पेडागॉज़ी. *एजुकेशन एंड ट्रेनिंग*, 52, 7–19. https://www.emerald.com/insight/content/doi/10.1108/00400911011017654/full/html?fullSc=1 &fullSc=1 1 मार्च, 2017 को देखा गया।

जोन्स, सी. और जे. इंग्लिश. 2004. अ कंटेम्परारी एप्रोच तो इंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन. *एजुकेशन एंड ट्रेनिंग*, 46 (8/9), pp.416–23. http://www.emeraldinsight.com/doi/pdfplus /10.1108/00400910410569533 10 मार्च, 2018 को देखा गया।

झा, एस. 2019. अनएम्प्लॉयमेंट रेट एट फोर डिकेड हाई : एन एस एस ओ सर्वे काम्परेड पास्ट फिगर्स. *बिज़नस स्टैंडर्ड*. https://www.business standard.com/article/economy-policy/unemployment-rate-at-four-decade-high-nsso-survey-compared-past-figures-119020100042_1.html 16 मार्च, 2019 को देखा गया।

डेमीरेल, ऑ. 2005. *एजुकेशनल प्रोग्राम डेवलपमेंट टू प्रैक्टिस फ्रॉम थ्योरी*. पेगेम पब्लिकेशन, अंकारा, टर्की.

नैक, एच. एम. और पी. जी. ग्रीन, 2011. इंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन: नोन वर्ल्ड एंड न्यू फ्रंटियर्स. *जर्नल ऑफ़ स्माल बिज़नस मैनेजमेंट*, 49(1), 55–70. https://onlinelibrary.wiley.com/doi/abs/10.1111/j.1540-627X.2010.00314.x 10 सितंबर , 2018 को देखा गया।

बर्क, एल. ई. 2005. *इन्फेंट,चिल्ड्रेन एंड अडोलसेंस* (पाँचवाँ संस्करण). ऐलेन एंड बेकन इनकॉर्पोरेटिड बोस्टन.

बंस, जे.पी. 1996. *कॉगनिटिव डेवलपमेंट एंड लर्निंग इन इंस्ट्रक्शनल कॉन्टेक्स्ट*. ऐलेन एंड बेकन इनकॉर्पोरेटिड. बोस्टन.

मवासलविबा, इ. एस. 2010. इंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन: ए रिव्यू ऑफ़ इट्स ओब्जेक्टिव्स, टीचिंग मेथड्स, एंड इम्पैक्ट इंडीकेटर्स. *एजुकेशन एंड ट्रेनिंग*, 52(1), 20–47. http://dx.doi.org/10.1108/00400911011017663 पर देखा गया।

यूरोपियन कमीशन. 2008. फाइनल रिपोर्ट ऑफ़ द एक्सपर्ट ग्रुप. इंटरप्रेन्योरशिप इन हायर एजुकेशन, स्पेशली विदिन नॉन-बिज़नस स्टडीज़. http://ec.europa.eu/enterprise/policies/sme/files/support_measures/training_education/entr_highed_en.pdf 2 फरवरी, 2015 को देखा गया।

———. 2011. इंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन: एनाब्लिंग टीचर्स एज़ ए क्रिटिकल सक्सेस फैक्टर . अ रिपोर्ट ऑन टीचर एजुकेशन एंड ट्रेनिंग टू प्रीपेयर टीचर्स फ़ॉर द चैलेंज ऑफ़ इंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन इंटरप्रेन्योरशिप. ब्रुसेल्स. द्वारा http://ec.europa.eu/enterprise/policies/sme/promotingentrepreneurship/files/education/teacher_education_for_entrepreneurship_final_report_en.pdf 2 फरवरी, 2015 को देखा गया।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग.2008. *इंटरप्रेन्योरशिप इन इंडिया*. http://www.nipccd-earchive.wcd.nic.in/sites/default/files/PDF/NKC_Entrepreneurship.pdf 18 मार्च, 2020 को पुन:प्राप्त किया

रा.शै.अ.प्र.प..2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. http://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/ ncf_hindi_2005/ncf2005.pdf 11 नवंबर 2014 को देखा गया।

विगफील्ड, ए., जे.पी. बंस और जे. एस. इक्क्लस. 2006. डेवलपमेंट ड्यूरिंग अर्ली एंड मिडिल अडोलसेंस. एलेग्जेंडर एवं एलेक्सजेंडर, ए.पी. और पी. एच. विन्ने (संपादक). हैंड*बुक ऑफ़ एजुकेशन सायकॉल्जी* (द्वितीय संस्करण). पृष्ठ संख्या 87–113. रुटलेज प्रकाशन संस्थान. लंदन, यू.के.

हरटे, वि. और जे. स्टीवर्ट. 2012. डेवलपमेंट, इवैल्यूएशन, एम्बेडेड, सस्टेनेबल — एंटरप्राइज़ एजुकेशन फ़ॉर कीप्स. *एजुकेशन एंड ट्रेंनिंग*, 54(4), पृष्ठ संख्या 330–339. (https://www.emerald.com/insight/content/doi/10.1108/00400911211236190/full/html) 16 मई, 2015 को देखा गया।